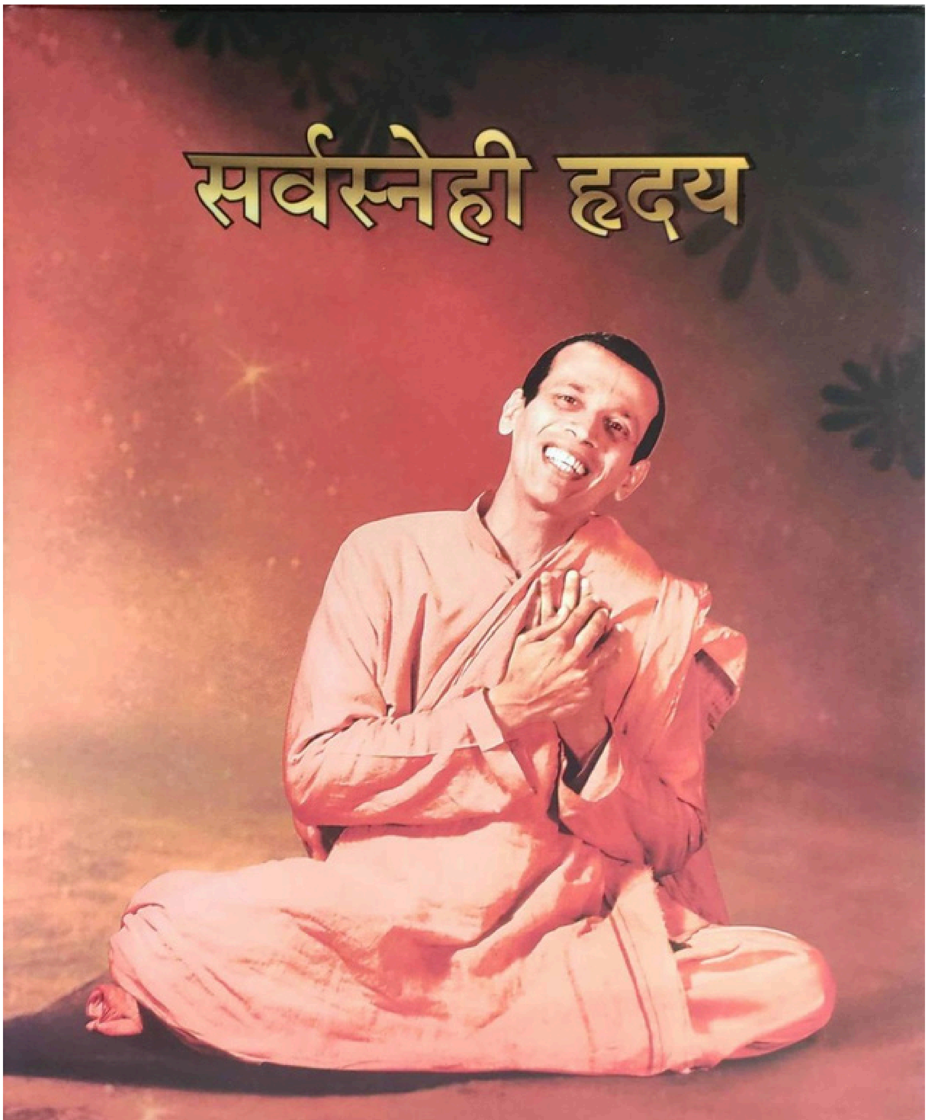



सर्वस्नेही हृदय

सर्वसे्नेही हृदय

'THE ALL-EMBRACING HEART'
का हहन्दी अनुर्ाद

कर्हयत्री

श्री स्वामी वेदान्तानन्द सरस्वती

भार्ानुर्ाहदका

सुश्री नीलमणि

SWAMI CHIDANANDA BIRTH CENTENARY
1916-2016
SERVE LOVE MEDITATE REALIZE
THE DIVINE ELIFES SOCIETY

प्रकाशक

द हिर्ाइन लाइफ सोसायटी
पत्रालय : हशर्ानन्दनगर - २४९१९२
हिला:   हटहरी गढ़र्ाल, उत्तराखण्ड (हहमालय), भारत
www.sivanandaonline.org www.dlshq.org

प्रथम संस्करि : २०१६
(१,००० प्रणतयाँ)

'द हिर्¸इन लाइफ सोसायटी, हशर्¸ानन्दनगर' के हलए
स्वामी पद्मनाभानन्द द्वारा प्रकाहशत तथा उन्ी् ीं के द्वारा
'मेहुल हप्रींट सहर्वस, नई हदल्ली' में मुहित।
ForonlineordersandCataloguevisit:disbooks.org

प्रकाशकीय

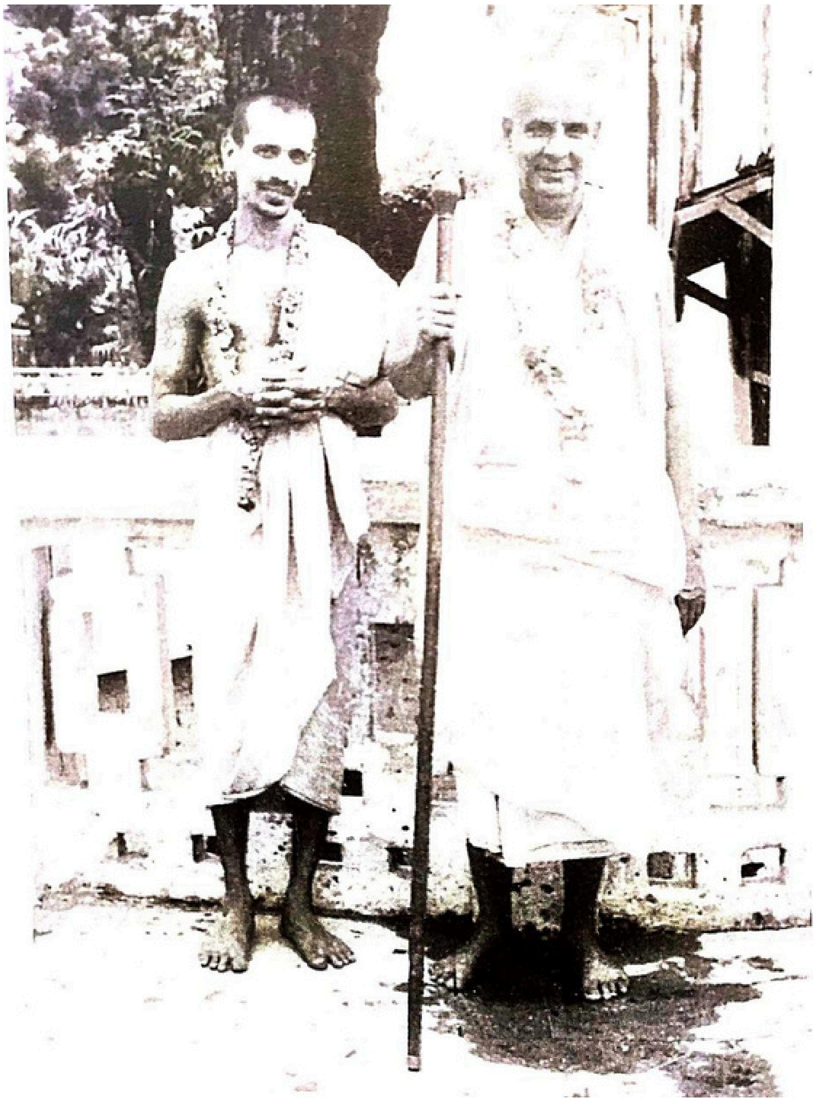
प्रसुतुत पुस्तक 'सर्वसे्नेही हृदय' श्री स्वामी रे्दान्तानन्द सरस्वती माता ि ी द्वारा परम पूज्य श्री स्वामी हिदानन्द ि ी महारिा पर अींगे्रिी भाषा में हलखी गयी कहर्ताओ ींके सुन्दर सींग्रह 'The All-embracing Heart' का हहन्दी अनुर्ाद है।

श्रदे्धेया रे्दान्तानन्द माता ि ी सद्गुरुदेर् श्री स्वामी हशर्ानन्द ि ी महारिा की एक समहपवत हशष्या थी। ीं उनके हृदय में श्री गुरुदेर् तथा परम पूज्य श्री स्वामी हिदानन्द ि ी महारिा के प्रहत असीम से्नेह एर्ीं श्रद्धा थी। इस पुस्तक की भार्पूर्व रिनाओ ींमें परम पार्न श्री स्वामी हिदानन्द ि ी महारिा के प्रहत उनके गहन पे्रम तथा भक्ति की अहभव्यक्ति हुई है एर्ीं साथ ही श्री स्वामी ि ी महारिा के पार्न एर्ीं हदव्य व्यक्तित्व का पररिय भी प्राप्त होता है।

परम आराध्य श्री स्वामी ि ी महारिा की िन्मशताब्दी के शुभ अर्सर हम यह पुस्तक 'सर्वसे्नेही हृदय' उनके श्रीिरर्ो ींमें श्रद्धापूर्वक अहपवत करते हैं।

-द णिवाइन लाइफ सोसायटी

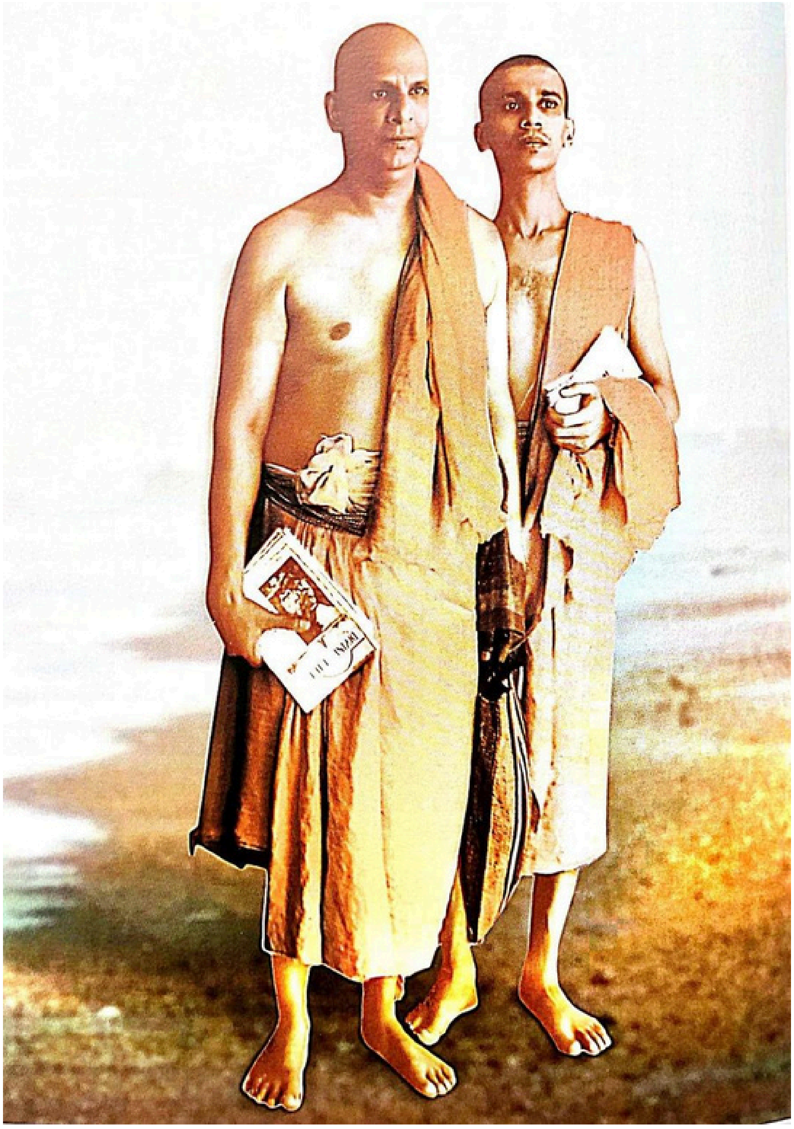
अनुक्रमणिका



कोहहनूर

रत्ो ींमें है प्रथम स्थान हीरे का।
हिस प्रकार उच्च तारापुींि हिन्ें मनुष्य
कहते ऑररयन और कालपुरुष
इनमें 'नीला मृग' तारक है सर्ावहिक आभायिु,
उसी प्रकार हीरो ींमें है कोहहनूर
सर्ावहिक प्रहसद्ध और प्रशींहसत।
इसकी परम शुद्धता और भव्य दीक्तप्त
बनाती है इसे श्रेष्ठता का उज्ज्वल प्रतीक।

आि हम अतीर् हषोल्लास से मना रहे
उन सन्त का साठर्ाँ िन्महदर्स हिनके हलए
सद्गुरु श्री स्वामी हशर्ानन्द िी महारिा ने कहा-
"ये मेरे हमशन के कोहहनूर हैं।"
हिदानन्द िी र्ास्तर् में एक रत् हैं ऐसे हिनसे
होती हर्कीर्व ज्ञान एर्ीं पहर्त्र प्रेम की रक्तियाँ सदा।
उनके मन के हनरभ्र सब पक्षो ींसे
हदव्य सद्गुर् ही होते उद्भाहसत सदा।
हमारे हृदय के गुह्यतम कक्ष
हिाँ है प्रभु की मनोहर मूहतव स्थाहपत
उस हृद-मक्तन्दर के कोने-कोने को
अक्षय आलोक से र्े करते हनत आलोहकत।



हशर्ानन्द और हिदानन्द

“स्वामी हिदानन्द िी के िरर्हिह् ींपर िलें"
कहा है यह हमारे गुरुदेर् ने
प्रकाहशत हकया है पुस्तको ींमें
और अींहकत भी हकया है हमारे हृदयो ींमें।
आइये, हम करें उनका अनुकरर्
हिन्ोंनें हकया गुरुदेर् श्री स्वामी हशर्ानन्द िी का
अपने र्िनो ींएर्ीं कमों से सदैर् अनुसरर्
और बने अहिकारी इस पार्न प्रशींसा के।

हिदानन्द िी भी हैं अत्यन्त दयालु
र्े िानते हैं हक सपव, पशु-पक्षी
और मानर्, समस्त प्रार्ीर्ृन्द की

एक ही है आर्श्यकता सहानुभूहत ।
सहानुभूहत है ई स्रोत
हिससे प्रर्ाहहत हो सच्चा र्ैहिक पेर्म
यह एक ऐसा मरहम िो शीघ्र ही भर दे
सींसार से प्राप्त गहरे घार्ो ींको;
िी मिनुष्यो ींको बनाए
सक्षम दु:ख, आघात, अपमान सहने को
और साथ ही करे पेर्ररत उन्ें
दु:क्तखतो ीर् पीहितो ींके प्रहत
सहृदयता एर्ीं हनत्य-परर्क्तद्धवत
पेर्म की अहभव्यक्ति को।
यहद हकन्ी ींसीर्ेदनशील हृदयो ींको
कटुता अथर्ा शींका आ घेरती
तो र्े देखें हिदानन्द िी को
हिनमें शान्त तपस् के मध्य भी
भार्प्रर्ण हाहदवक पेर्म उद्भाहसत होता सदा,
हिनके हर्िारमग्न नेत्र दशावते हैं हदव्य पेर्म।
हिनके होठीं हैं सुन्दर
सदैर् पेर्रक र्िनो ींके उच्चार से;
हिनकी गम्भीर परनु्तु मृदुल मुस्कान
हिनका मौन और र्ार्ी

हिनके कमव और हर्श्राक्तन्त
सदैर् हमें कराते हैं स्मरर्
हक महान् किो ींएर्ीं पीिा के मध्य भी
सद्गुर्ो ींके हशखर को छूना है सम्भर् ।

हम भी प्राप्त कर सकते हैं
हनश्छल पेर्म की ऊँिाईयाँ,
और ज्ञान की पराकाष्ठा
यहद हम करें अनुसरर्
गुरुदेर् श्री स्वामी हशर्ानन्द िी के पार्न िररत्र का
तथा स्वामी हिदानन्द िी के पहर्त्र आिरर् का
हिनके हलए कहा है सद्गुरुदेर् ने
और हकया है प्रकाहशत
अींहकत भी हकया है हमारे हृदयो ींमें हक
“हम उनके िरर्िह्नो ींपर िलें।"



समदृहि

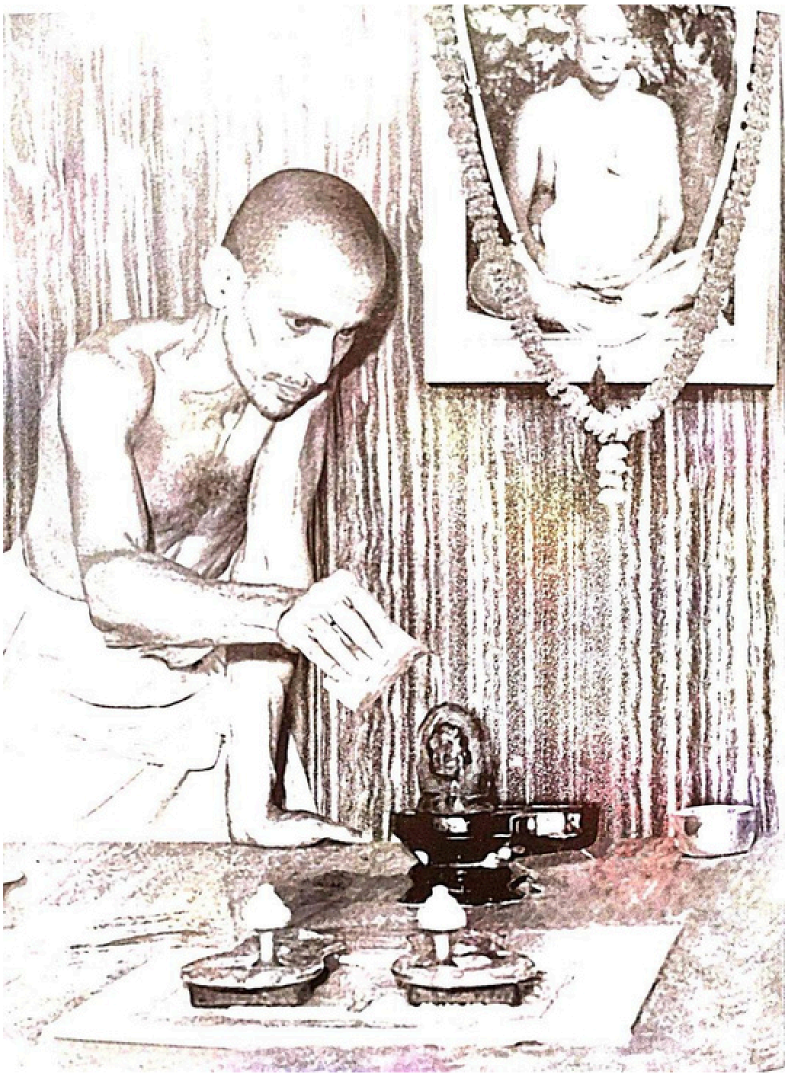
हमत्रो ! कैसे कोई कर पाता सहन
इस िीर्न के किो ींको
बि अत्यिाार और हनदवयता का
आि है िहुँओर हस्तार,
नीरसता, हनराशा, उदासीनता, भय
और सन्ेदेह में िक़्ि हैं अनेको ींिीर्िाएँ
हद न होते इस िरा पर
श्री हिदानन्द सम सर्वस्ेनेही सन्त ?

क्या आप एक दुलवभ एर्ीं उच्चतर
सौन्दयव और मनोहाररता के हैं दशवनाहभलाषी ?
तो देक्तखए उन्हें िब रे् करते नृत्य कुष्ठरोहगयो ींसींग,
बि रे् हनहारते आश्चयव से, न हक घृर्ा से
हततो ींएर्ीं अज्ञाहनयो ींको।
और िब उनें् करना है,
हकसी की गम्भीर त्रुहट का सुिार
रे् न करते कभी क्रोि से
उसके त्रुहटग्रस्त हृदय को आहत;
अहपतु काटते अज्ञान ग्रक्ति को
ज्ञान के शाक्तन्तप्रद शस्त्र से।

हमत्रो ! क्या कोई रख सकता
उच्चादशों एर्ीं मूल्ो ींमें हर्िास एर्ीं श्रद्धा
इस हर्भ्रमकारी िमक-दमक के युग में
बि 'स्वर्व' कह कर प्रायुः थमा दी िाती है
कोई िमिमाती र्सु्तु झूठे गुरुओ ींद्वारा
और िनलोलुप सिुओ ींद्वारा।
बि प्रखर बुक्तद्धसम्पन्न हर्िारहीन मनुष्य
हनत नर्ीन सािन हैं खोिते
िा ले िाएीं समू्पर्व मानर्ता को
भयींकर हर्नाश की ओर-
क्या ऐसे युग में रख पाते हम
िैयव, आशा एर्ीं शाक्तन्त सुक्तस्थर
यहद न होते इस िरा पर
श्री हिदानन्द सम सर्वस्नेही सन्त ?

देक्तखए ! देक्तखए, हकतनी करुर्ापूर्वक रे् उठाते
मागव में आए एक कुरुद्ध हबचू्छ को
एक तप्त रेतीले स्थान से और
रख देते उसे शीतल ओसपूर्व घास पर।
देक्तखए, कैसे रे् स्नेहहल हाथो ींसे उठाते
एक सुरहभत सुमन अथर्ा बालक के पहर्त्र मुख को।
उनकी है समदृहि सबके प्रहत-
तुच्छ और महान्, हनिवन और िनर्ान्
रुग्ण, स्वस्थ, सज्जन, दुिवन
पररहित, अपररहित, दूर हो ींअथर्ा समीप
सब हैं समान उनकी दृहि में।
देक्तखए, कैसे रे् करते हैं सम्माहनत
सभी िमों के सन्त-महापुरुषो ींको।
मनुष्यता न होगी कभी हनराश

बि तक हैं ि‍रा पर
श्री हिदानन्द सम सर्वस्नेही सन्त ।



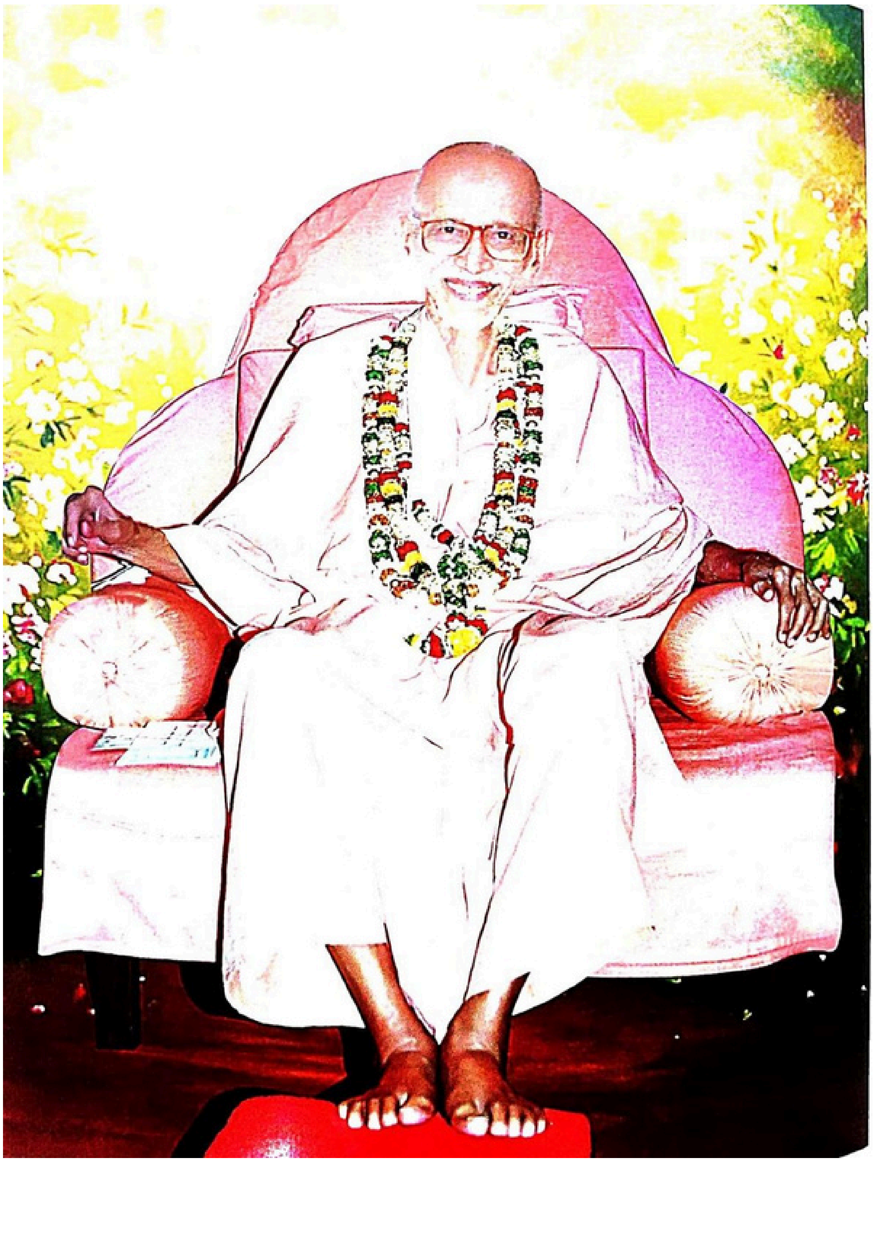
समाहि मक्तन्दर में

क्या स्मरर् है हमत्रो, ई हदन आपको
बि रखा गया एक कूप-सम कक्ष में
हमारे गुरुदेर् की पाहथवर् देह को
इस सुसक्तज्जत समाहि मक्तन्दर के नीिं;

और भिरून्द का एक रूहद् समूह बढ़ा आगे
दशवनाथव हप्रय गुरुदेर् के मनोहारी मुख के
पुनुः एक बार-इसके उपरान्त हफर कभी नही ीं?
हमत्रो ! क्या कोई कर सकता हर्सूमृत ई समय
बि श्री हिदानन्द िी थे ख़िै इस सोपान पर
एक सींरक्षक देर्दूत सम और कर रहे थे प्रयास,
रोकने उस रूहद् समूह को
हनयक्तित करने मानर्-बाढ़ को
अिानक कब्ज़े टूटे द्वार के
घरघराहट सहहत खुल गया द्वार
और अपने सींकेत, द्वारा एर्ीं दृहि से
हकया हनयक्तित उन्ोंनें उन बहुशीषाव लहरो ींको ?
अि-दीक्तप्त से हनत-देदीप्यमान उनके रे् नेत्र
तब उस एक व्यहथत क्षर् में
सहसा भयाक्रान्त हो िमके
और यह कहते-से प्रतीत हुए :
"क्या इसी हरि् का मुझे है करना सामना
िहाँ प्रेम भी रूप लेता क्रोिोन्माद का
अपनी अहनयक्तित गहनता में;
िहाँ श्रद्धा एर्ीं भक्ति भी
अिानक बन िाती एक तूफान-
एक शक्ति िो कुिल देती
अपने मागव की बािाएँ सब
हशिता के सभी हनयमो ींको तोड़ ?"
और तब भी, रे् पीछे नही ींहटे;
अि भी अपने ियहनत पथ से रे् नही ींहोते हरि्हलत
यही उनका हमशन है हक रे् ि़िले
अपने गुरु के शाक्तन्तदायक शब्दो ींको तैलािारा सम
(िैसे हक नाहर्क हैं ि़िलते उफनती लहरो ींपर)
उन उग्र एर्ीं शोक-सन्तप्त हृदयो ींपर
िी किरते हदव्य शाक्तन्त प्राप्त करने का प्रयास
सौम्य हृदयो ींके साथ-साथ।

परन्तु िाहनए! पर्न द्वारा झुलायी शाखाओ ींपर ही हैं उगते
सूयव-पररपक्व, मिुरतम बींपूररत फल।
शाक्तन्त रे् प्रदान करते हैं अन्यो ींको,
करके पररत्याग उस असीम हदव्य शाक्तन्त का
प्राप्त होती िो उन्ें एकान्त एर्ीं मौन में।
ये सब िीरिाएँ हैं अध्याि के प्रगहत पथ पर
यह ज्ञान ही है हिदानन्द िी के हलए पुरस्कार स्वरूप।
यद्यहप प्रायुः होता उन पर आघात

ऐसे दृश्यो ींएर्ीं ध्वहनयो ींका िो करें आहत एर्ीं पीह़ित
एक सिाारर् मानर् को; परन्तु रे् होर्गें सफल
दूर-दूरन्त प्रसार करने में
प्रशाक्तन्त के आशीर्ावद-पहत्र् आनन्द का
तथा उस ज्ञान का िो हसखाया
गुरुदेर् श्री स्वामी हशर्ानन्द िी ने
ैसा हक रे् स्वयीं भी हसखाते,
अपनी र्ार्ी और कमों से।
हम सब उनके अनुयाहययो ींके हलए
आि-साक्षात्कार का ऊध्ववगामी पथ
बन िाता है आरोहर्-सुगम
बि उन समान सन्त बरसाते हम पर
अपने पार्न िीर्न का अमृत।



न्मिहदर्स की शुभकामनाएँ

पुष्पमालाएँ िो हमने गूँथी–ीं
दयामय स्वामी हिदानन्द िी आपके हलए,
उस शुभ हदर्स पर आपको प्रसन्न करने
बि आपका हुआ इस िरा पर अर्तरर् -
मुरझा िुकी हैं क्योहींक
हकया आपने दूर देश को प्रस्थान।

हमारे शरीर न कर पायेंगे आपका अनुसरर्
परन्तु हम करेंगे प्रयास हर सम्भर् रूप में
रने अनुकरर् आपके उज्ज्वल आदशव का;
हमारे मन-हृदय कर सकते हैं आपका अनुगमन
हिँ भी आप िाते हैं कायव अथर्ा हर्श्राम को
हिस प्रकार पक्षीर्ृन्द करते अनुसरर् पथप्रदशी पक्षी का।

उन सुकुमार पुष्पो ींकी तरह नही ींिो मुरझा िाते
समय की तीव्र गहत के साथ-साथ
अहपतु सुदृढ़ भूहम में हैं सुक्तस्थर
आपकी प्रसन्नता हेतु हमारी शुभकामनाएँ
सदैर् पररपूर्व और हनत नर्ीन ।
हम करते हैं अहपवत उन्ें
आपके िरर्-कमलो ींपर
आि और सदा के हलए।

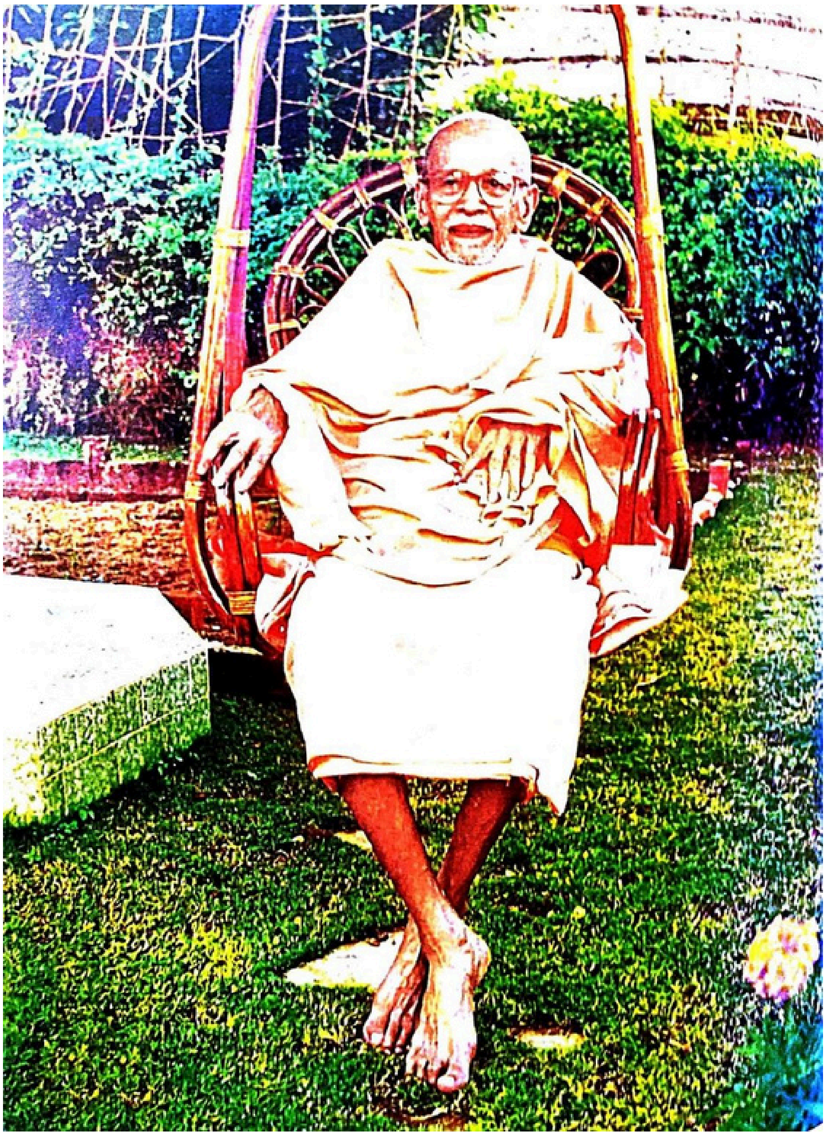


सचे्चे पथप्रदशवक

प्रिीन समय में, महान् तपस्वी सन्तो ींके हशष्य
यहद गहन नों ींमें भटक िाते अथरा
हरी-भरी भूलभुलैया में
भूल िाते अपना मागव,
आश्रम में िब होता सींध्याकाल का आगमन
तारारृन्द सहहत परन्तु उन युरा हशष्यो ींरहहत
तब आश्रम के अहिपहत सन्त
स्वयीं हनकल पड़ते पे्रेमपूर्व करुरा के हो र्शीभूत
ढूँढ़ने अपने हप्रय आहश्रतो ींको उस गहरी गोिूहल रे्ला में
बि राक्षस और व्याघ्र हरि्रते, पाने अपना आहार;

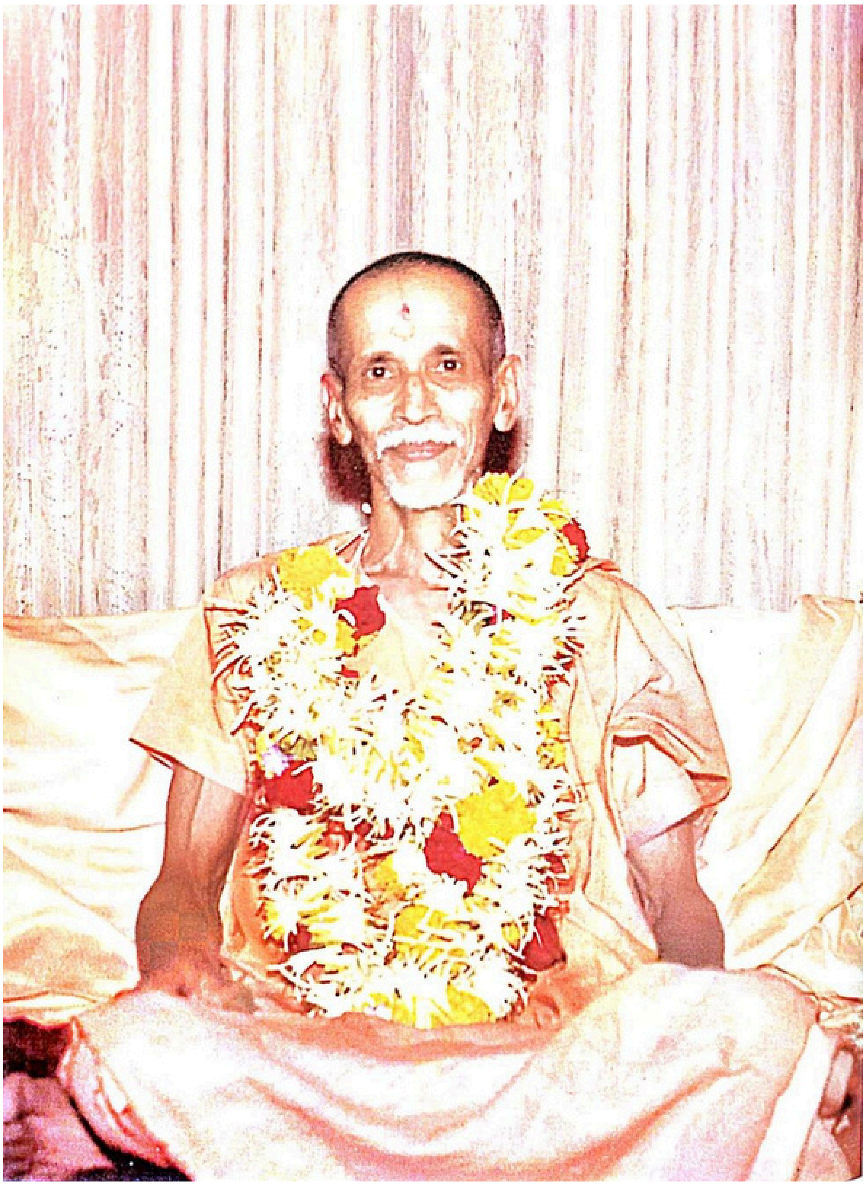
रे् उनें् ढूँढ़कर, सानत्वना देकर र्ाहपस ले आते अ
पने सुपररहित मागव से सुरहक्षत स्थान पर।

इसी प्रकार श्री स्वामी हशर्ानन्द िी अपने ज्ञानपूर्व उपदेश से
पुनुः हरि्ास हैं िगाते और करते हैं सुदृढ़ श्रद्धा को
उन अगहर्त हशष्यो ंके हृदयो ंमें िो
भटक गये थे सने्देह र् भय के अरण्ो ंमें।
श्री स्वामी हिदानन्द भी यही करते हैं यहद सिाक
होते हैं भयाक्रान्त, भ्रम एर्ं हनराशा के घने िंगलो ंमें।
रे् िानते हैं अपने गुरु द्वारा हनहमवत उस पथ को
िो गहन र्न से खुले मैदान की ओर है िाता;
साहसपूर्वक तोड़कर उन कँटीली झाहड़यो ंको
िो बाँधे हैं पग एक गृहासि सिाक के,
रे् कर देते नाश आत्मा के पथ में आए सभी पाशो ंका।



रक्षाबन्धन पूहर्वमा

नही ींहै मेरे पास रेशम के सूत्र में बँाी सुन्दर राखी
आपकी पार्न कलाई में बाँनिे को
हे कृपामय, सौम्य श्री स्वामी हिदानन्द िी;
परनुतु बँा हैं सुरहक्षत सभी सचे्चे हृदय आपके हृदय से
िाओ इस रक्षाबन्धन पूहर्वमा के पहत्रे हदर्स पर
और सदा के हलए-सुख की सुनहरी िूप
और कि के तूफानो ींमें—
श्रद्धा और भक्ति के दृढ़ सूत्रो ींसे।



बादशाह हुज़रार् और उनका सेर्क

कही ि◌ाती है एक कथा बादशाह हुज़रार् र् उनके सेर्क की-
हकस प्रकार बादशाह एक बार गये आखेट को
सेर्कों,◌ों दरबाररयो,◌ों अहतहथयो ◌ोंके साथ
करने हशकार एक हनदवयी व्याघ्र का और तत्पश्चात्
करने हर्श्राम ि◌ोंगल के एक प्रािीन पररत्यि ि◌ीर्व भर्न में-
थे सभी आश्चयविहकत उनके सहपहथक
बुक्तद्धमान् बादशाह की इस आकक्तस्मक सनक पर
हक र्े करेंगे हर्श्राम एक ि◌ीर्व-शीर्व खण्डहर में।
परन्तु बादशाह तो बढ़ते रहे ि◌ुत गहत से पथ पर
और ि◌ानक हगरायी बहुमूल् मोहतयो ◌ोंसे भरी सनदूक
मोती लुढ़के रेत में हझलहमलाते मन्द-मन्द

नन्् िन्द्रमाओ ींसम अथर्ा एक तारक की अश्ुरुबूँदो ींसम।
बादशाह ने पीछे मिुकर कहा : "प्रत्ेयेक रखे मोती उतने
हितने हं भूहम से उठा सके" और िल हदये स्वयीं िुत गहत से।
सभी सहसा रुके, उतरे अपने अिौ ींसे, टटोलने लगे रेत,
की उन्ोनीं खिो पत्थरो,ीं काँटो,ीं नुकीली घास के नीि
और एकहत्रत खिाने को हछपा हलया अपने कमरबन्दो ींमें।

मात्र एक युर्ा सेर्क ने हकया अत्यहिक हिन्तातुर हो
यह हर्िार : "पहुँिेंगे प्रथम मेरे स्वामी
उस िीर्व खण्डहर में; आह! कौन उनके हलए
लाएगा शीतल िल, हबछाएगा आसन, झलेगा पींखा,
तोिेगा फल और िगाएगा उस क्लान्त रक्षक को
उनीदेंपन से यह कहने हक हं करे स्वच्छ
और करे व्यर्स्था र्ायु-प्रर्ेश की, उन बन्द कक्षो ींमें।
नही ींरुका यह सेर्क अहपतु हदया सींकेत अपने कुशल अि को
अनुसरर् करने हुज़रार् के िुतगामी अरेहबयन अि का।

र्े दोनो ींपहुँिे उस स्थान पर और र्हाँ इस श्रद्धालु सेर्क ने
की पररियाव अपने स्वामी की अत्यन्त स्नेेहपूर्वक
हछपाते हुए दाहक खरोंिें, पाटी िो उसने
िींगल के कण्टकाकीर्व पथ में।
कृपालु एर्ीं हर्िेकी बादशाह हुआ िहर्त एर्ीं हहषवत भी;
और िब पहुँिे र्हाँ दरबारीगर् एर्ीं अन्य शेष
हुए र्े अहत सन्तप्त देखकर उस सेर्क को
बादशाह के समीप आसन पर बैठे हुए
और अपने हप्रय स्वामी के प्ेरेरक शब्दो ीं

की महदरा का पान करते हुए।
क्योहींक था हुज़रार् एक पार्न एर्ीं ज्ञानसम्पन्न मनुष्य।
र्े सभी हुए उहद्वग्न पश्चात्ताप से परन्ुतु
पा न सके प्रशाक्तन्त अपने उन बहुमूल् मोहतयो ींमें।

यह है एक प्रािीन प्रतीक-कथा
स्पि होगा इसका अथव उन समस्त को
िो हैं आकाींक्षी उस सर्ोच्च लक्ष्य के।
कथा यह देती हमें िेतार्नी, मागव में नही ींभटकें हम
मागव िो मोहान्धता और भ्रामक आकषवर्ो ींके
बीहि क्ेषेत्र और िहटल भुलभुलैया से होकर िाता;
कभी न हर्िरें हम तृष्णा की तपती रेत में
नि और क्षहर्क सुखो ींकी खोि करते हुए;
न दें प्रत्ुयुत्तर, समीप आए प्रलोभनो ींका;
करें सन्तो ींके शुभ साहन्नध्य की आकाींक्षा
िो है हर्भूहतयाँ परम प्रभु की

और से्नेहहल करुर्ा से हदखलाती
है िो मागव उनकी प्राक्तप्त का।

अहो! हकतने सौभाग्यशाली हैं हम, पाया अपने पथ-प्रदशवको ींको-
महान् श्री स्वामी हशर्ानन्द िी और उनके आध्याक्तिक सुपुत्र !
इस पार्न हदर्स पर हमारे ही कल्यार् के हलए
ज्ञान एर्ीं प्ेरम से पररपूर्व श्री स्वामी हिदानन्द िी ने
िारर् हकया िरा पर यह रूप
ीी ीआि हम हैं देखते और करते आरािना,
हिर आभार और हनत-नूतन भक्ति की मालाएँ
हम करते हैं अहपवत उनके सुन्दर कींठ में।
अनेकानेक समृद्ध एर्ीं से्नेहपररपूररत र्षों तक
रहें र्े अपने अनुयाहययो ींके मध्य,
हो ींप्राप्त उन्ें अहतशय आनन्द एर्ीं तृक्तप्त,
प्रकाश िो उदारतापूर्वक र्े प्रदान करते हैं हमें
कृतज्ञ हदयो ींमें उसकी प्रहतहबक्तम्बत छहर्
करे उनका हनत्य अहभनन्दन।



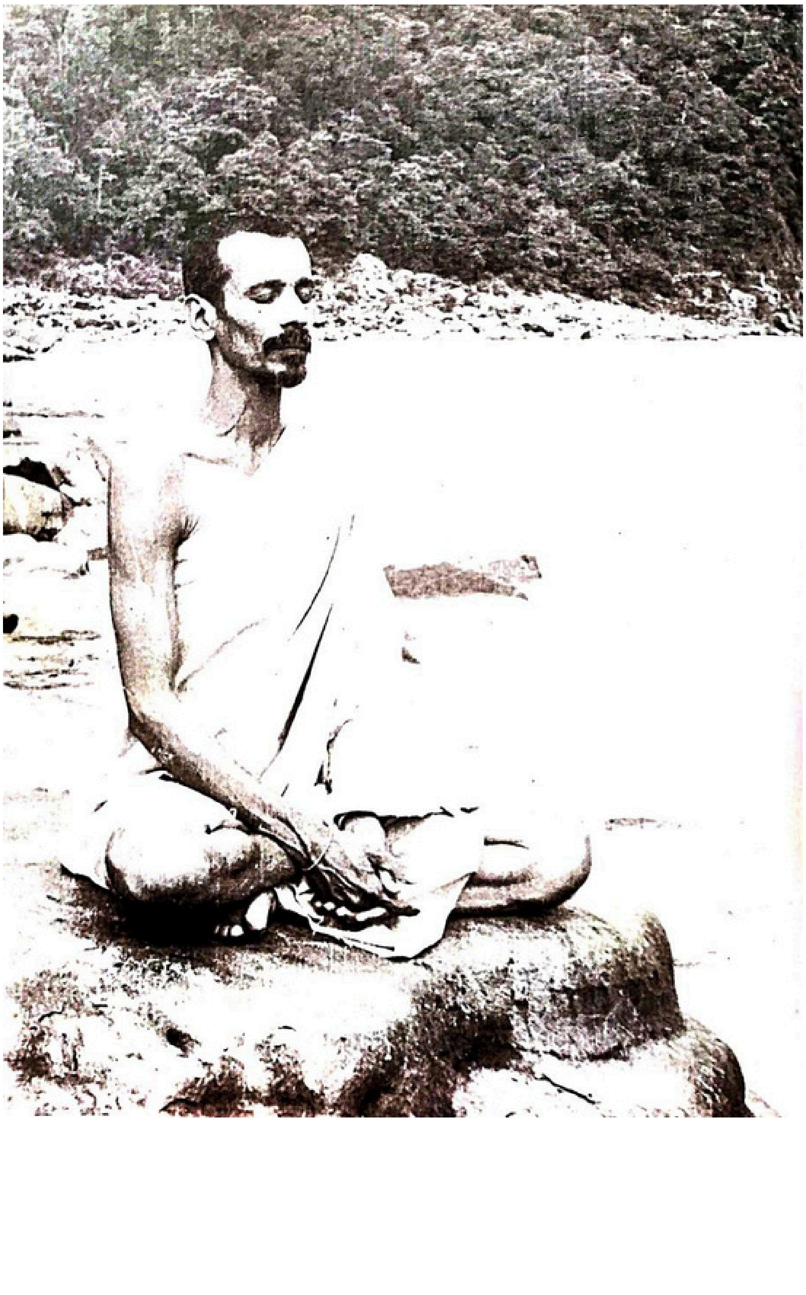
स्वर्व ियन्ती

शुद्ध स्वर्व ही गढ़ा िाता
हार, कींगन, अँगूठी और मुकुट रूप में
और हदव्य स्वहर्वम आिा ही
प्रकट होती नाम-रूप र्ेश में
समस्त अशुक्तद्धयो ींसे मिु
पूर्व िन्मो ींके अहग्नपात्रो ींमें पररशुद्ध।

महान् सन्त श्री स्वामी हिदानन्द िी आए
एक दीक्तप्तमन्त आभूषर् बन
हमारे महान् भ्रातृ-सींघ की परम्परा में
और सक्तम्महलत हुए श्री शींकरिाायव से
श्री स्वामी हशर्ानन्द सम रत्ो ींकी भव्य पींक्ति में
हरि् में अमूल् ज्ञान रक्तियाँ हर्कीर्व करते।

हे सौम्य, स्वहर्वम हृदयी सन्त
कृपालु स्वामी हिदानन्द िी
हिनकी आि हम मना रहे
शुभ स्वर्व ियन्ती।
आपके गुरु भाई और बहहनो ींकी
और आपके समस्त सचे्चे हशष्यो ींकी
यही है शुभकामना

हक आप िुबली से िुबली पयवन्त-
ाियमण्ड, पे्लेहटनम, एमरॅल्ड, और भी आगे-
शात्कन्त एर्ीं आनन्दपूर्वक रहें
तथा देखकर हो ींहहषवत
मानर्-कल्ार् हेतु अपनी हनुःस्वाथव सेर्ा के
आनन्ददायक स्वहर्वम फल को।



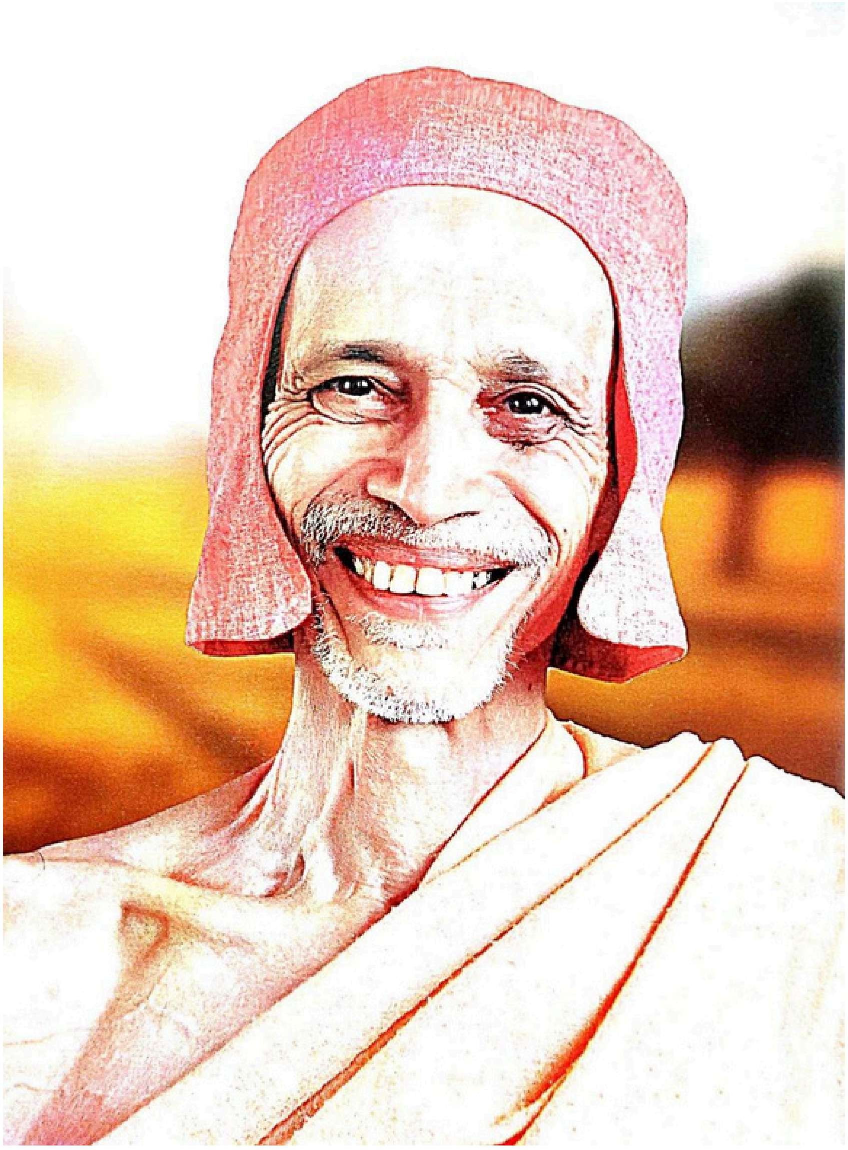
उन्ें पुकारा गया

हम करते हैं आरिाना, स्वामी हिदानन्द िी की
उच्च, दुलवभ, रिाभ कुमुहदनी पुष्प सम
ारिर् करते हैं िो गेरुआ -
यह र्ंव है अहग्न का और इसहलए प्रतीक पार्नता का-
और प्ेरम करते हैं िो पर्वत हशखरो ींऔर स्वच्छ पर्न से।
यहद र्े ियन करते तो रह सकते थे
एकाकी, दूरस्थ उच्च हशखरो ींपर
हिाँ है मौन और हनरभ्र शाक्तन्त का साम्राज्य
ाा हैं उन्ें अत्यन्त हप्रय
और िहाँ मध्याह् में हो दशवन हदर्ा-तारक का।
र्हीं ींहकसी स्वच्छ पर्वतीय झरने के समीप
रहते एकान्त में परनुतु एकाकी नही ीं
क्योहींक इिर स्वयीं करते हैं हनर्ास उनके हृद्देश में
सद्हिन्तन और परम सत्य के ध्यान में
व्यतीत करते अपना समस्त िीर्न।

परनुतु र्े आये हमारे मध्य
करने अपने गुरु का कायव
और हदखलाने हिज्ञासु िीर्ाओ ींको
परमानन्द प्राक्तप्त का पथ।
इस हर्शाल हर्श्व के दूरस्थ क्ेषेत्रो ींसे
उन्ें पुकारा गया, की गयी प्राथवनाएँ
हक र्े करें हाँ भी प्रसार
पहर्त्रता की सुरहभ और ज्ञान के प्रकाश का
और अपनी हदव्य उपक्तस्थहत से
करें आहत हृदयो ींका उपिार।
तब हममें से हकसी ने कहा :
कैसे र्े कर पायेंगे सहन
अपने पथ में आये शोर और
अशाक्तन्त के तूफानो ींको ?

हम भी कैसे रह पायेंगे
उनके प्रार्दायक प्ेरम से र्ींहित हुए?
हमत्रो! है उनके हृदय में ही
एक शान्त-प्रशान्त हर्श्राक्तन्त स्थल
हिाँ र्े पाते असीम शक्ति
उन तूफानो ींको सहने की

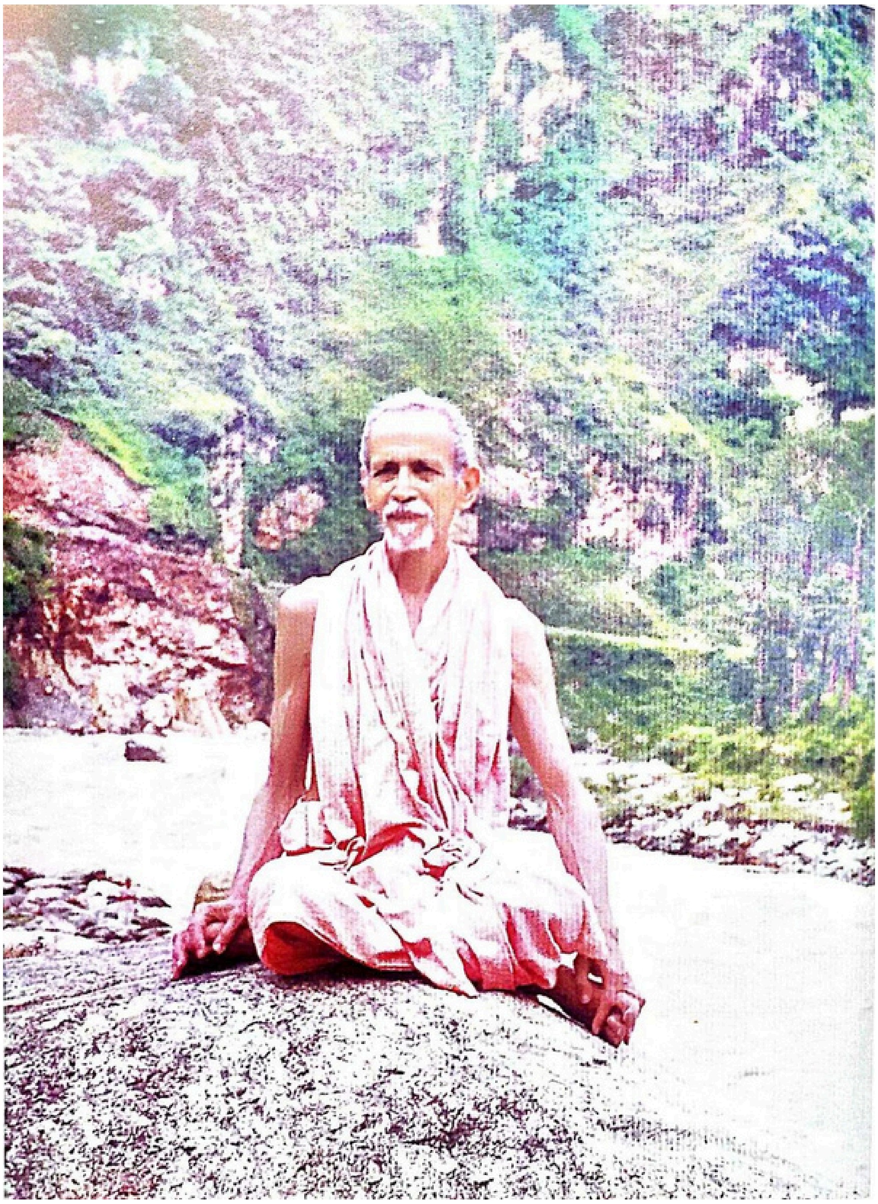
हिनसे भयभीत भागते हैं दुबवल िन।
हमत्रो! िाहे र् करें अपने सदय पे्रम की
अनेको ींअन्य हृदयो ींपर र्षाव,
पे्रम हम पर उनका न होता है कम
क्योहींक उसका स्रोत है अकु्षण्ण
और करेंगे हम अनुभर्
उसके हनत्य प्रर्ाह को
अभी और सदा के हलए।



बींकि

बि स्वामी हिदानन्द िी हर्देश की एक िेल में
गए हमलने हाँ के अन्तेर्ाहसयो ींसे-
बींकिो,ीं दोहषयो,ीं अपराहियो ींसे;
दी गयी उन्ें पूर्व िेतार्नी हक ये कू्रूर अपरिाी
करेंगे उनका उपहास, न सुनेंगे उनकी र्ार्ी को
अथर्ा आघात पहुँिाने का करेंगे प्रयास
और देंगे उन्ें हाँ से िाने का आदेश!
परनु्तु हाँ उनकी उपक्तस्थहत का हुआ ऐसा िमत्कार
उनके र्िन थे इतने स्ेनेहहसि और हर्ासोत्पादक
इतनी मिुर और सच्ची थी उनकी सहानुभूहत
हक अत्यन्त कटुता एर्ीं हनराशा से भरे हृदयो ींने

पायी असीम शाक्तन्त, सानत्वना और साहस
यह सुनकर - "मनुष्य के अपरिा हैं
िाा के, पूर्वता एर्ीं मोक्ष प्राक्तप्त के
पथ की मात्र दुघवटनाएँ,
मनुष्य है पहर्त्र िाा, अज्ञान के पाश में आबद्ध
और दक्तण्डत अपरिी न समझें
स्वयीं को सदा के हलए पहतत एर्ीं घृहर्त"
बि स्वामी िी िाने के हलए मुिे, कुछ ने पक़िी उनकी बाँहें,
कुछ हलपटे उनसे; बहे हृदयहर्दारक अशु्रु कुछ नेत्रो ींसे
प्राथवना की गयी उनसे हक न िाए इतना शीघ्र
और शपथ भी उठायी गयी हक
र्े स्मृहत में सदैर् सँिोये रखेंगे, उनके हदव्य र्िनो ींको।
हम सब भी बींकि हैं : अशान्त मन,
देह, र्ासनाएँ, झूठी मान्यताएँ और दुःख
बाँिे हुए हैं हमें लौह अथर्ा स्वर्व-हपींिर में,
स्वामी हिदानन्द सम करुर्ार्ान् सन्त
िो स्वयीं बँिे हैं केर्ल मात्र मानर्ता के प्रहत हनुःस्वाथव प्रेम से
करते हैं हमारी सहायता उन दुःखो ींको िैयवपूर्वक सहन करने में,
िो हमने स्वयीं ही उत्पन्न हकए अनेक िन्मो ींमें;
अब हम हनहारते हैं इन काल्पहनक सलाखो ींसे उन सन्तो ींको
िो अर्तररत हुए हैं, हमें मुक्ति प्रदान करने को।



आध्यात्तिक उपहार

प्रीीन समय के एक सन्त ने हकया
अपने ही मन में एक अद्भुत मक्तन्दर का हनमावर्
ाि हर्नि न हो पाए अहग्न अथरा् अहतरूहि से
भूकम्प अथरा् तूफान से और न ही मानर्-कृत्य से!
पे्रेररत हो उनके इस हनमावर् से हमने यह समझा
हक हरा्रो ींसे ही कर सकता है मानर्
सन्तो ींऔर प्रभु की मानहसक आरािना
बना सकता है ई काल्पहनक हर्तान,
कर सकता है अहपवत अमूतव हर्शाल थाल में
रा के ियहनत, सुन्दर, मिुरतम फल।

हे हिदानन्द िी! देक्तखए कैसे करते हम आपको नमन
यद्यहप हमसे अहत दूर हैं आपके पार्न िरर्।

माया के स्वहिल सींसार में, हम देखते हनत नूतन स्वि
और भिी रहे आपके हलए अदृश्य परन्तु अकु्षुण्ण उपहार
हनहाररए, अपने िरर्ो ींमें यह अदृश्य पुष्प
समहपवतहृदय रूपी पुष्पमालाएँ
और आपको आच्छाहदत करता हमारा यह स्नेह-छत्र!
कुछ करते हैं नृत्य, कुछ गाते हैं, हो आनन्दमग्न
आप देख रहे हैं, हाँ आप देख रहे हैं
इन सूक्ष्म आध्याक्तिक उपहारो ींको
अपनी आर्रभेदी हदव्य दृहि से।
हे हिदानन्द िी! देक्तखए कैसे करते हम आपको नमन
यद्यहप हमसे अहत दूर हैं आपके पार्न िरर्।

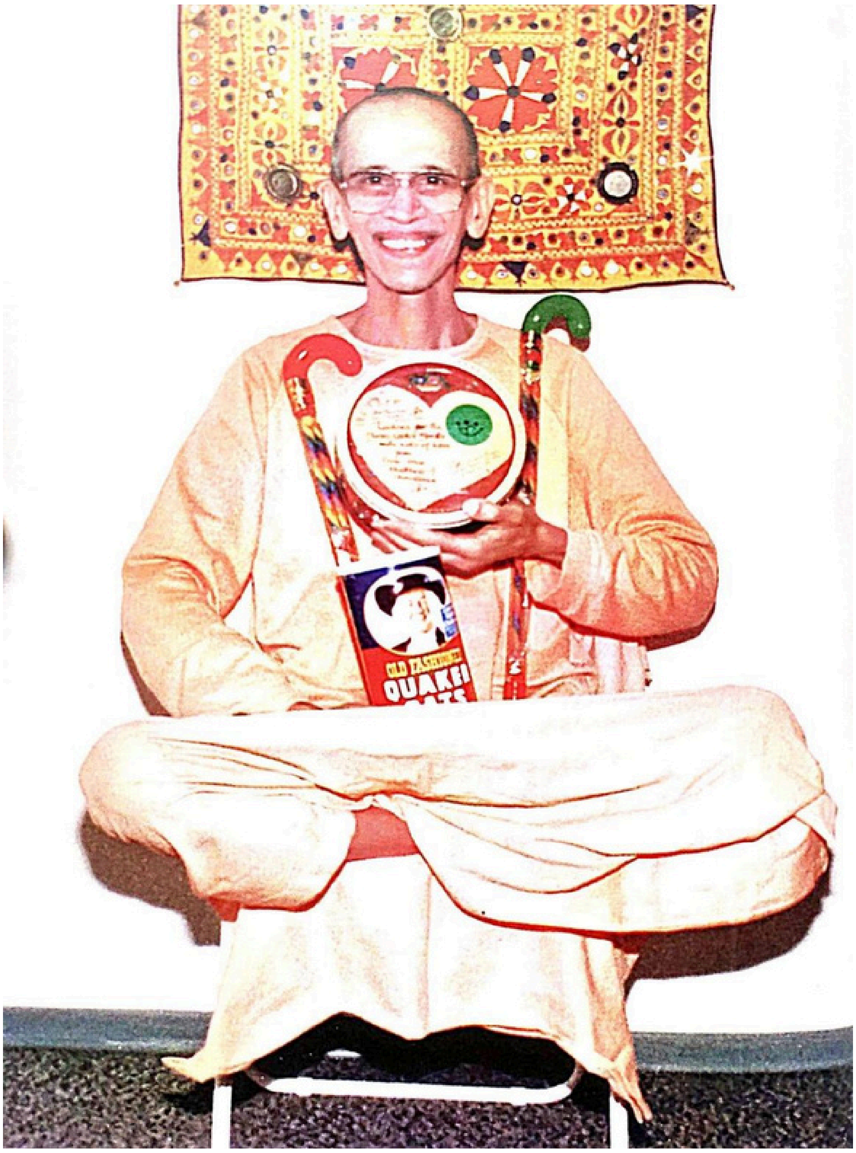


कपोत की र्ापसी

हशर्ानन्द आश्रम के पार्न प्रींगर् में,
हहषवत हैं जिो सभी हृदय
क्योहींक आए हैं लौटकर हमारे पास
श्री स्वामी हिदानन्द िी महारिा
हिन्र्ोंनें समभार् से बाँधा अपने हदव्य स्र्नेहाहलींगन में
उत्तर, दहक्षर्, पूर्व और पहश्चम सभी को;
िैसे हक माली है सिाता एक पुष्पगुच्छ
गुलाब, नरहगस, कमल और गुलदाउदी के पुष्पो ींसे।

र्े हैं एक स्वाथवशून्य शाक्तन्त-कपोत,

ी ि़िता है अन्यो ींके हलए,
अपने हिरपररहित स्थान को छिो़
अन्धकारग्रस्त हरि् में करने प्रकाश
श्री स्वामी हशर्ानन्द िी की र्ारी् से
और अपने सारगहभवत उपदेशो ींसे।
आिो, िब यह सुन्दर शाक्तन्त-कपोत लौट आया है
हम करते हैं उनसे प्राथवना-अपने पार्न पींखो ींको मिो़ ले यहाँ
हिाँ आप रहे और कायव हकये श्री गुरुदेर् के साथ।
हे हप्रय कपोत! हनहाररए इन कोमल हृदयो ींको
ी उतु्सुक हैं आपके हर्श्राम हेतु शय्या बनने को
ाहिे आप उनके समीप हैं अथर्ा दूर,
आप ही के हलए है सदैर् उनका श्रद्धापूर्व प्ेरम।



उपहार

नही ीं है हरि् में कोई ऐसा
हिसने न हदया उपहार कभी-
मूल्र्ान् अथर्ा सिाारर् उपहार।
देर्गर् देते हैं र्दान;
र्निीन करते हर्तररत अपने साहथयो ीं में
अपनी सम्पदा का कुछ अींश;
हनिवन तो हकतने उदार-
देते ि ो दान हनिवनतरो ीं को।
समूपूर्व हरि् ही देता मिुहस्त उपहार
हप्रय ि नो ीं को अथर्ा प्रहसद्ध ि नो ीं को
न्मि हदर्स, ि ुबली अथर्ा हरि्य हदर्स पर

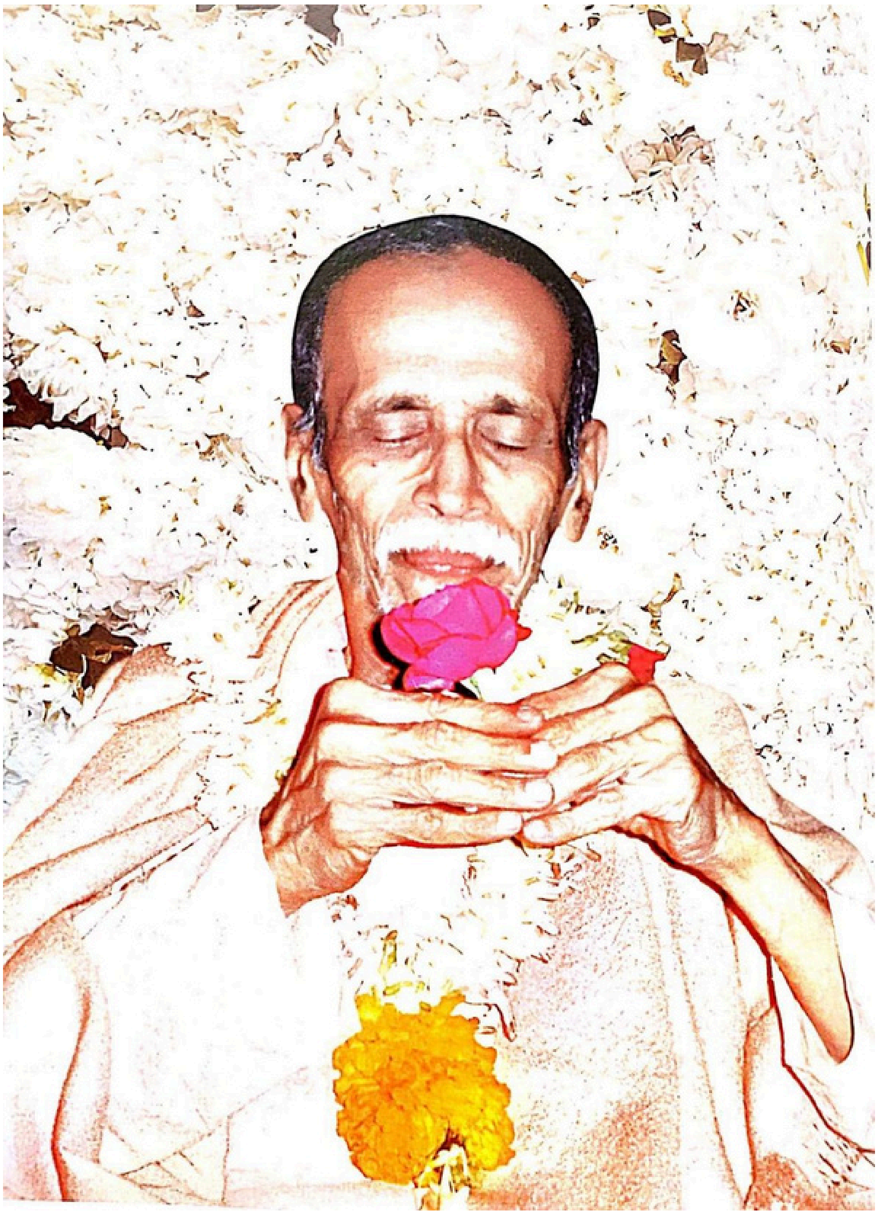
और दुलवभ उपलक्ति एर्ीं सफलता प्राक्तप्त पर।

प्रहतर्षव श्री स्वामी हशर्ानन्द िी के िन्महदर्स पर भिर्ृन्द
अहपवत करते उपहार, उनके पार्न िरर्-कमलो ींमें
लोबान, रित, स्वर्व और स्त्र
िीनी अथर्ा मुरमुरो ींके छोटे थैले;
और अनेक अन्य उपहार
सुरहभत पुष्पमालाओ ींके साथ-साथ।
रे् करते सभी स्वीकार
कृपापूर्व मुस्कान तथा प्रे्रेमपूर्व दृहि से
भक्ति एर्ीं प्रे्रेम के प्रतीक स्वरूप
मूतव एर्ीं मानहसक र्स्तुएँ
अहपवत की गयी उन्ें, उस शुभ प्रभात में।
तथाहप रे् सर्ोत्तम उपहार न कर सकते समता उसकी
िो देते श्री स्वामी िी महाराि,
क्योहींक रे् हैं बरसाते ग्रहर्शील हृदयो ींपर
उपहारो ींका उपहार : मुक्तिप्रदायक ज्ञान।
यह है ईश्वर का असीम अनुग्रह
और एक अद्भुत आश्चयव !

श्री हिदानन्द िी के रूप में प्रभु ने हदया
श्री स्वामी हशर्ानन्द िी के अनुयाहययो ींको ऐसा सन्त
िो है उन सम दीक्तप्तमन्त तारक
उनके समान ही सद्गुरु्
मानर्ता के प्रहत प्रे्रेम में उनके समकक्ष ।
सन्त हशर्ानन्द िी और सन्त हिदानन्द िी
होते हैं प्रकाहशत साथ-साथ हमारे हृदयाकाश में।
अतुः उस पार्न हदर्स

िब हुआ िन्म श्री स्वामी हिदानन्द िी का
हदव्य िीर्न पथ के यात्री
करते हैं अहपवत हाहदवक उपहार
उनकी गोद में, उनके हाथो ींमें
और उनके िैयवशील िरर्ो ींमें।
स्वामी िी करते हैं स्े्नेहपूर्वक स्वीकार उनकी प्रे्रेम भेंट,
मुस्कराते हैं उन शब्दो ींपर िो हैं अींहकत इस पृष्ठ पर
करने उनका यशोगान :
रे् रै्से ही मुस्कराते हैं िैसे मुस्कराते हैं
माता-हपता, सन्तान द्वारा अहपवत पुष्पो ींपर।
उनके हर्शाल उदार हृदय से
हनत-प्रर्ाहहत होता सुन्दरतम उपहार,

क्योहींक रे् सतत करते अपना ही दान।
हे अक्षय स्रोत,
हे पहर्त्र उपहार; हे भव्य भेंट !
आप ि◌ीर्न हैं ि◌ारर् करते, कि सहते
और करते प्रयास हमारे हलए,
हमारे ही हलए आपने हकया त्याग
एकान्तिन्य शात्तन्त का
और दी है अपनी आहुहत;
आपकी प्रते्येक ि◌ास करती है
प्रशहमत एर्ं सुरहभत हमें।
हे हदव्य सन्त!
करने आपको प्रसन्न, क्या कर सकते हैं हम अहपवत ?
यही हक अपने हृदय रूपी हभक्षा-पात्र को
हम रखें आपके समक्ष और
अनन्त आभार के साथ करें प्राप्त
आपका हनुःस्वाथव हदव्य उपहार -
आपके मुक्तिदायक पे्रम का उपहार ।



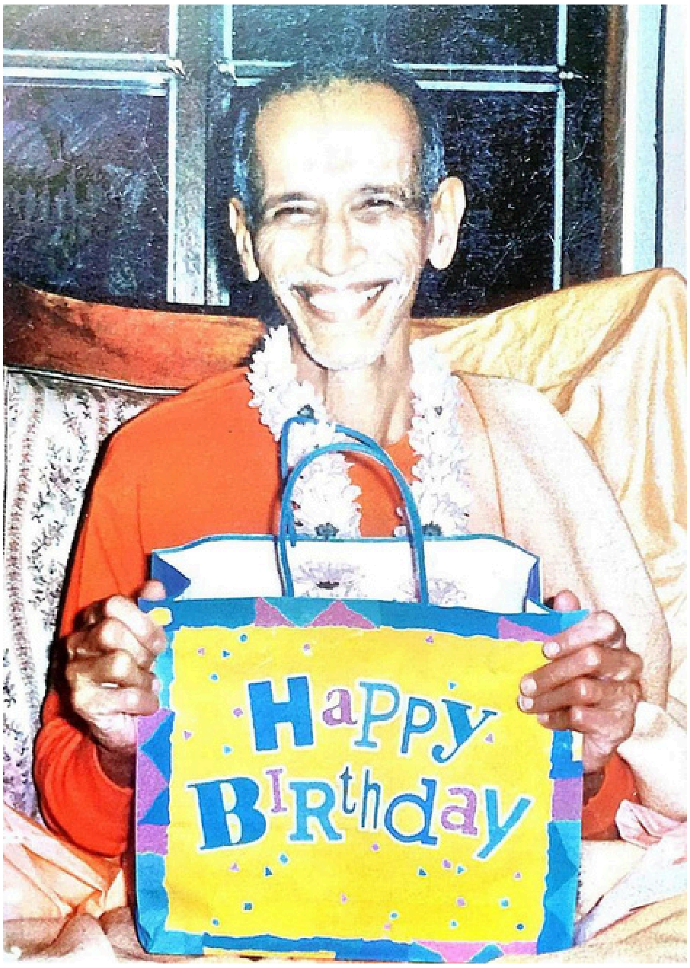
श्री स्वामी हिदानन्द िी के हलए एक पेपररे्ट

प्रते्येक सुतु है प्रतीक यहाँ :
यह िेत-हशरामय पत्थर

हिसे गढ़ा गया एक पते्ते की आकृहत में
करता िो प्रदहशवत लघु स्तर पर
एक रृक्ष की आकृहत-
प्रतीक है रृक्ष हरि् का
और यह हरि् स्वयीं है प्रतीक
इिंर की रहस्यपूर्व शक्तियो ींका।

कररए इस र्सुतु को उलटा
तो हदखाती यह आकृहत हृदय की।
यह पत्थर, एक रृक्ष, हिज्ञासु हृदय
समस्त है बहते, प्र्ाहहत हैं होते
स एक के भव्य स्वि की उहमवयो ींमें
हते िाते और पुनः समाते उस एक में।
गुरु के पहत्र उपदेश और अनुग्रह ही
कराते हशष्यो ींको इस सत्य का साक्षात्कार।

रृक्षो,ीं पत्थरो,ीं अरुुओ ींका
सूयों और समुिो ींका हृदय
श्री स्वामी हिदानन्द िी का कोमल हृदय
सभी हैं रहते उस हृदयो ींके हृदय में
ये हैं अनेक, पर एक ही है।
यहद तीव्र गहत से होता हमारा निीी-स्पन्दन
करते हुए ध्यान इस हर्िार पर,
होता ऐसा इसीहलए हक हम कर रहे शीघ्रता
माया के बन्धनो ींसे परे िाने की और
ई बनने की िो हम हैं ही।

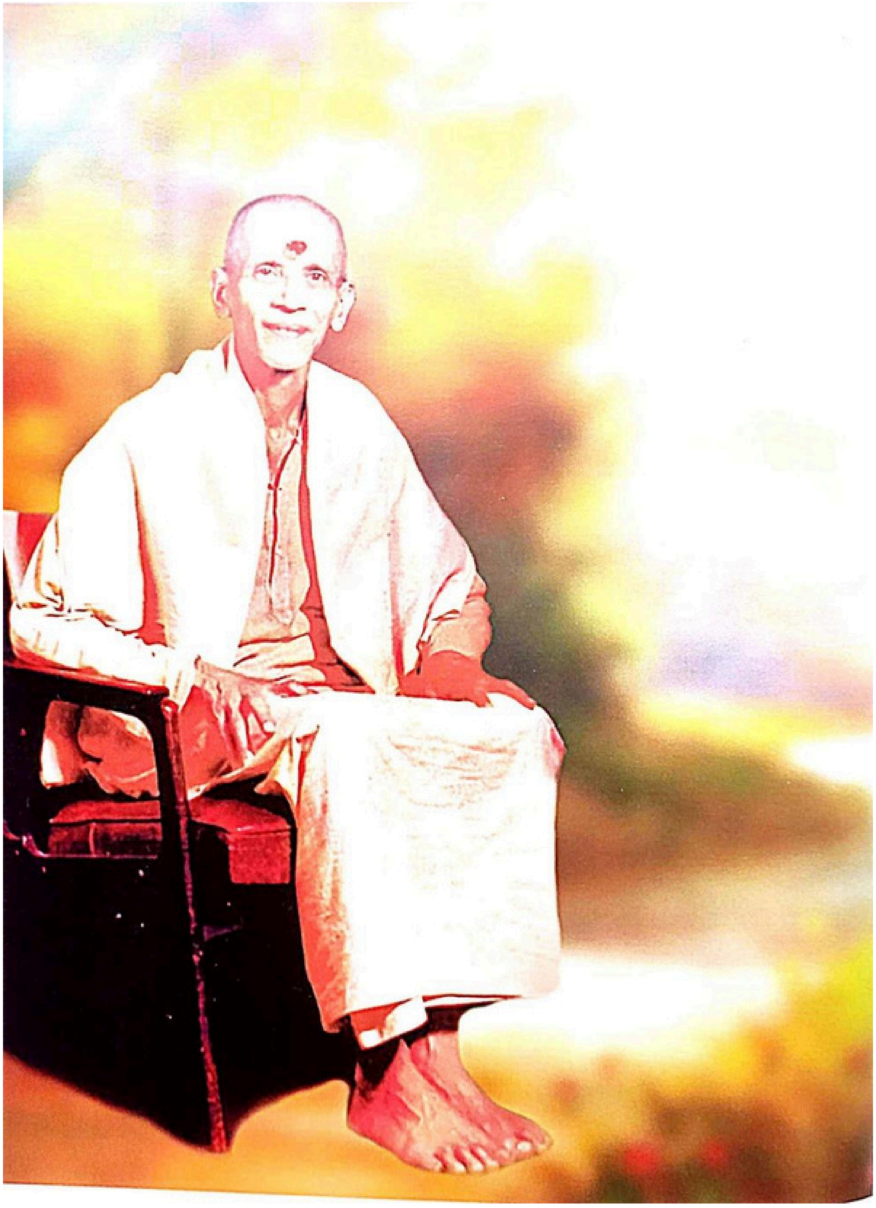


२४ हसतम्बर १९७१

ऐसे कौनसे पुष्प अपवर् कर सकते हैं हम आपको
ि निही ींहोते अहपवत प्रहतहदन आपके श्री िरर्ो ींमें?
ऐसी कौनसी मालाएँ गूँथ सकते हैं हम आपके हलए
ि नि उपलि होती बािार और दुकानो ींमें?
कौनसे नर्ीन और दुलवभ उपहार, कर सकते हैं हम तैयार
प्रसन्न करने आपको? हकस प्रकार कर सकते हम आनक्तन्दत उन्
ि प्रदान करते पहर्त्र आनन्द उन सबको
आते िो उनके पास शाक्तन्त एर्ीं आनन्द की खोि में?
क्या सागर न मुस्कराएगा यहद ड़िले कोई
लि उसकी लहरो ींपर स्वर्व अथर्ा हमट्टी के पात्र से
करने हृदय शीतल उसका ग्रीष्म ऋतु के एक हदन ?

परन्तु, हफर भी हम दें आपको, श्रेष्ठतम िो है हमारे पास।
बन िाए समस्त मनुष्यो ींके आपके सम्बन्ध में हर्िार
कण्टकरहहत, हनमवल, हनत-प्रफुक्तल्लत गुलाब सम
और मिुमक्खी-हर्हीन कमल पुष्प सम

मारती िो िींक उसको आता िो समीप
मोहहत हुआ पुष्प के सौन्दयव और सुरहभ से।
ीर्निदाता प्रभु से करते हैं सभी प्राथवना
पररपूर्व करें रे् आपकी हृदयाकाींक्षा।
और उम्ीती है हमारे हृदयो ींसे यही शुभकामना
करुर्ामय सन्त श्री स्वामी हिदानन्द िी करें सुशोहभत
इस हनष्ठुर सींसार को अपनी शाक्तन्तप्रद हदव्य उपक्तस्थहत से
अनेकानेक र्षों तक।



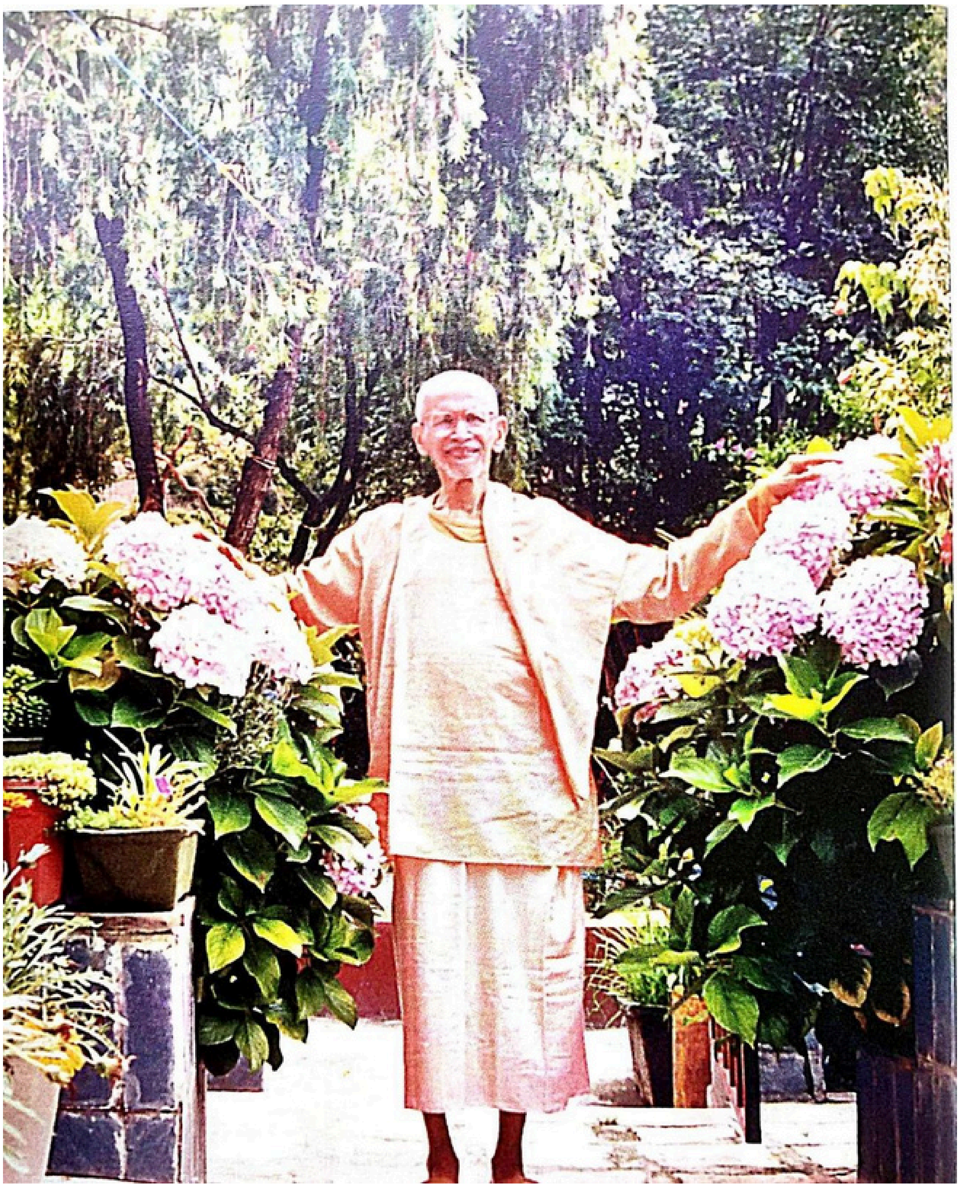
एक कलाकार की भेंट

श्री स्वामी हिदानन्द िी से एक हदन
कहा एक अहत उत्साही कलाकार ने-
"कीहिए स्वीकार इन्ें; केर्ल आप ही देख सकते इन्
ये पुष्प न पाये िाते इस समूपूर्व िरा पर कही;ीं
क्योहींक पायी मैंने स्वयीं में
नर्ीन रूप और आकृहत हनमावर् की शक्ति।
बना सकता हँ मैं और कर सकता हँ आपको अहपवत
अद्भुत सौन्दयवशाली पुष्प और आभूषर्
नर्ीनतम र्सुतुएँ िो देखी न गयी मनुष्यो ींद्वारा
और न ही ईिर द्वारा।

हिस प्रकार कुशल माली करते हर्कहसत
हर्लक्षर् आकृहत एर्ीं रींगो ींके नर्ीन पुष्प
मैं भी रिता अपने मन की कल्पनाओ ींमें
नर्ीन र्सुतुएँ और करता मानहसक अपवर्
आपके श्रीिरर्ो ींमें।"

सौम्य गुरु ने क्तस्मतपूर्वक हदया प्रतुयुत्तर-
"मेरे बालक, माली की नर्ीन रिनाएँ पल्लहर्त होती
रिा की पुरानी हमट्टी में, प्रािीन सूयव और र्षाव तले
और हैं र्े हर्कहसत रूप, पूर्व-हर्द्यमान रूपो ींके।
सुतुएँ िो तुम रिते सूक्ष्मतम कला-कौशल से
हो ींहकतनी नर्ीन तुम्हारे हलए, परनुतु र्े तो हैं
र्ैहिक मन में उत्पन्न प्रमुहदत तरींगो ींकी मात्र अहभव्यक्तियाँ
प्रकहटत हुई र्े तुम्हारे समक्ष, बने तुम एक उपकरर्
ईिर की अहैतुकी कृपा एर्ीं अनुग्रहर्शात्।

बालसुलभ उतुसुकता के साथ करते तुम आकाींक्षा
देने इन नर्ीन और दुलवभ उपहारो ींको उन्हें
हो तुम श्रद्धा और प्रेम से पररपूर्व हिनके प्रहत;
रींग और रेखाएँ हिनका तुम करते सक्तम्मश्रर्
लेते हो तुम उन्हें पूर्वतुः हर्द्यमान सम्पदा से ही।
तब, लक्तज्जत और हर्िारमग्न, साथ ही
हो कृतज्ञ इस महान् हशक्षा के दान से,
मन-हृदय कर पररपूर्व प्रसन्नता से
उस कलाकार ने हकये अहपवत मनोहनहमवत उपहार
श्री स्वामी हिदानन्द िी के हनत्य-हर्वर्ान् िरर्ो ींमें।



लाभ और हाहन

मानर्ता को करना िाहहए उनसे प्ेरम
िी दैते हैं मानर् को अहिकाहिक
और उनसे तो अत्यहिक प्ेरम िो दे देते सर्वस्व अपना-
अपनी शक्ति और सहानुभूहत, अपना समय और ज्ञान।
क्या ऐसे महामानर्
लाभाक्तित हैं होते अन्यो ींके उपहारो ींसे
अथर्ा क्या रे् खो सकते हैं कभी कुछ
ैसिे हक अन्य मनुष्य सदैर् होते आक्रान्त खोने के भय से।
नही,ीं रे् कभी कुछ खोते नही ीं
क्योहींक उन्ोनेंीं सदैर् ही हदया अहिकाहिक ।

आप भी िाहते नही ींखोना, तो दीहिए, बाँहटए।
यहद यह अद्भुत सींसार प्रायुः प्रतीत होता
कू्रूर तथा कठोर, करुर्ाशून्य और ज्ञानहहीन
कर नही ींसकता यह हर्दीव आपका हृदय, हे दयामय सन्त!
क्योहींक िानते हैं आप
पे्रम की सर्ोद्धारक शक्ति नही ींहै एक कल्पना;
हाँ, भली भाँहत िानते हैं आप इस सत्य को,
क्योहींक पे्रम करता है हनर्ास आपके हृदय में
हे मानर्ता के सौम्य से्नेहहल सखा, श्री स्वामी हिदानन्द िी।



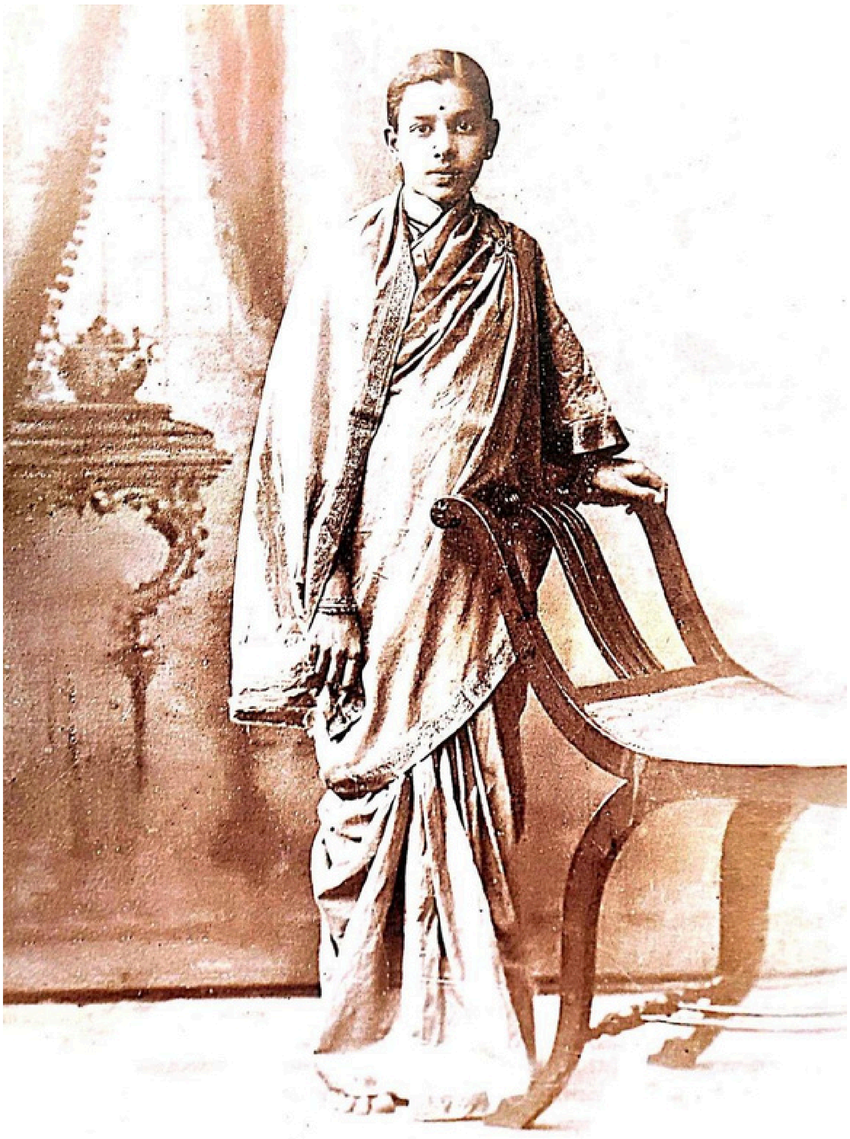
पे्रम की मशाल, आस्था की ध्विा

एक पहर्त्र हशखर के आरोहर् हेतु
तीथवयात्री कर रहे हैं प्रस्थान
हभन्न-हभन्न स्थानो ींसे प्रारम्भ कर यात्रा;
यद्यहप कुछ कर रहे प्रगहत बहुशाखीय मार्गों से
पहुँिना है सभी को एक ही स्थान।
लम्बे िुलूसो ींमें अथर्ा समूहो ींमें
अथर्ा एक-एक कर एकान्त में,
तीव्र गहत से आगे बढ़ते हुए
अथर्ा इिर-उिर भटकते हुए
िि ही रहे हैं सब पहथक।
परनुतु कुछ, हिनकी दृहि है तीक्ष्र् अन्यो ींसे

हिनके हाथ एर्ीं पैर, हृदय और सींकल्प
दृढ़तर हैं अपने सहपहथको ीींसे,

रे् करते हैं हनदेहशत उनें् सुरहक्षत पथ
और िट्टानो ीींसे हनहमवत आश्रयस्थल
हल्की ढलानें, कहठन परनु्तु लघुतर रासे्ते
तथा ख़िी िट्टानो ीींमें पैर रखने के स्थान,
अन्धकार में हलए मशाल और ध्विा।
बि होता प्रकाश, रे् नही ीींहैं छिोते उनें्
रखी है आस्था हिन्ोंनें उन पर
देते रे् नर्ीन साहस, सानत्वना और सहायता
राह में हगरे हुए अथर्ा राह से भटके हुए पहथको ीींको।
इसी प्रकार करुर्ामय हिदानन्द िी करते हैं पथ-प्रदहशवत
पक़ि पे्रेम की मशाल और आस्था का ध्वि ।
स्वयीं की अन्तु:पे्रेरर्ा से सींिाहलत हुए
अपने गुरु के पद-हिह्ो ीींका अनुसरर् करते हुए,
हदव्य आशा से पररपोहषत हुए
रे् करते हैं पथ-प्रदशवन हर्भन्न देशो ीींके सािको ीींका-
आध्याक्तिकता के समस्त हिज्ञासुओ ीींका -
उस उच्चतम लक्ष्य की ओर, िो करना है प्राप्त सभी को
अपना ही पहर्त्र स्रोत-परम िािा।

यही है कामना हक रे् अपने ियहनत पथ पर
अनेक अनेक र्षों तक
पाते रहें मनोहारी पुष्प, करने उनें् आह्लाहदत
स्वच्छ झरने और मृदुल पर्न
करने उनें् प्रमुहदत एर्ीं प्रफुक्तल्लत;
पायें रे् सतत आनन्द िीर्ाआो ीींको दे सींकट से मुक्ति
अथर्ा भटके हुओ ीींकी पुनः प्राक्तप्त से
तथा सतत अनुसरर् करने र्ाले हनष्ठार्ान् अनुयाहययो ीींसे;
और पायें रे् अर्र्वनीय सूक्ष्माहतसूक्ष्म हदव्य आनन्द
हिसके हर्षय में हम मात्र देख सकते हैं स्वि
बि तक हक रे् न करें प्रहशहक्षत हमारे उतु्सुक हृदयो ीींको
ऐसी भव्य उपलक्ति योग्य ।



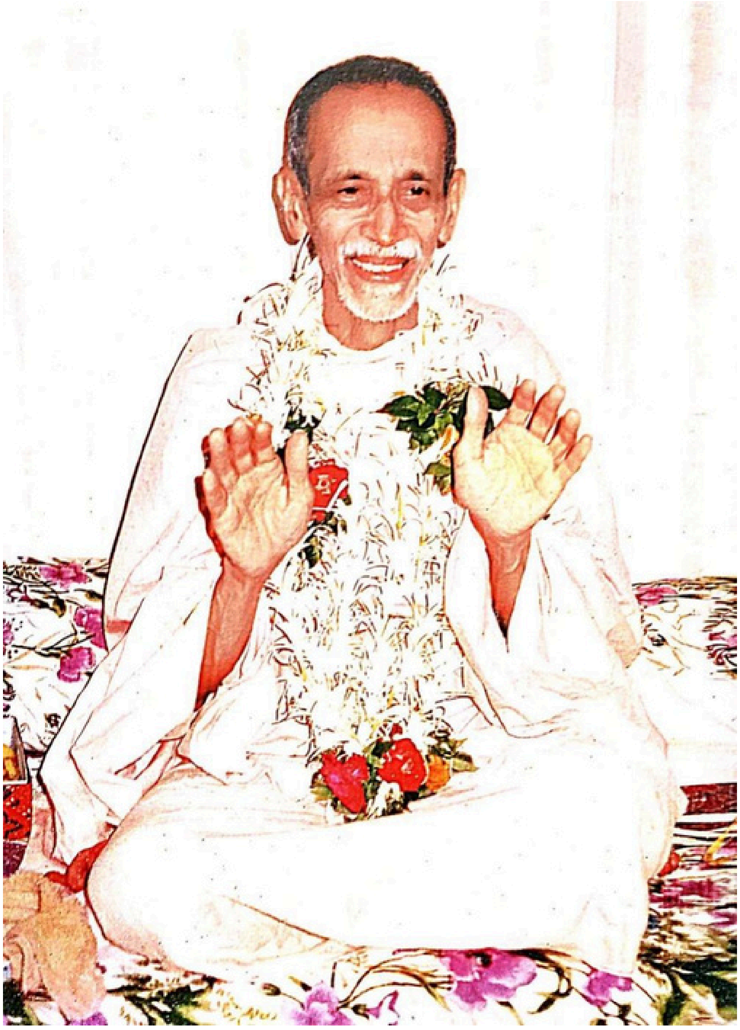
सिुन्या स्त्री सरोहिनी

सभी िाहते हैं सुनना महापुरुषो ींकी माताओ ींके हर्षय में
उनके आदशव िोरर् और प्ेरेरक प्रभार् के हर्षय में
और हकस प्रकार हदये उन्ोनें अपने हप्रय बालक को
अपने सर्ोत्तम सद्गुर् तथा हकया पररपोहषत उन गुर्ो ींको

ि बालक लाया ही था अपने साथ पूर्वतु:।

अतुः हो प्रशींसा से पररपूररत हम देखते रहे एकटक
उन महान् स्त्री की छोटी सी तस्वीर को
ि थी माता श्री स्वामी हिदानन्द ि ी की
और था हिनका सुन्दर नाम 'सरोहिनी'
परनुतु त्याग दी है हिन्ोनें अपनी पाहथवर् देह ।
देखते ही रहे हम लम्बी अर्हि तक उनके
हृदयस्पशी तारूण्सम्पन्न, प्रौढ़ास्र्था से अनछुए
हनमवल, हनष्कपट, अतीर् शान्त-प्रशान्त
क्तस्मतरहहत परनुतु अहर्कुषि, बालर्त् हनदोष
पार्न और पहत्र मुख को।

उनकी प्रहतमा प्रहरि् हो गयी हमारे हृदय में,
नेत्रो ीं के माध्यम से; हम करते अहभलाषा
उनके हर्षय में अहिकाहिक सुनने की।
क्योहींक ि ो थे उनसे पररहित, पे्रेमपूर्वक करते हैं स्मरर्
हकस प्रकार थी ीं र् सम्पन्न मानर्ता के हप्रयकर गुर्ो ीं से
श्रद्धा, सहानुभूहत, करुर्ा, दानशीलता और
अन्य हदव्य सद्गुर्ो ीं से, हिन्ें हम हैं देखते
उनके यशस्वी सुपुत्र में। यहद हम उन्ें हमल सकते
और कुछ कह सकते! हम उनसे कहते यही-
"आप ि न्य हैं देर्ी, ि ो हैं ऐसे पुत्र की ि ननी !
हम करते याना आपसे, कीहिए प्राथवना हमारे हलए
हक अनुकरर् कर आपका और उनका, हम करें प्राप्त
उनकी पररपूर्वता के कुछ हिह् और
आप सम सौम्यता और सहृदयता।"



सर्वसे्नेही हृदय

क्या है इतना उच्चतम हक
उसके हशखर भी हैं अदृश्य ?
श्री स्वामी हिदानन्द िी के
परमोच्च हरि्र।

क्या है इतना गहनतम हक
उसकी गहराई है अपररमेय ?
श्री स्वामी हिदानन्द िी की
अगिा सहानुभूहत।

क्या है आकाश सम अनन्त
इन्द्रिनुष, मेघ और तारारून्द सहहत ?
श्री स्वामी हिदानन्द िी की
सुमिुर अनुकम्पा ।

क्या है रूहत गगन सा हर्शाल
मनुष्य के हृदयकमल में हछपा ?
श्री स्वामी हिदानन्द ि ी का
सर्वसे्नेही हृदय।



घास और कुमुहदनी

कहा िाता है श्री स्वामी हिदानन्द िी के हर्षय में :
"रे् हैं एक एकाकी और गम्भीर
र्सिंी-तनी-ग्रीर्ा के कुमुहदनी पुष्प सम,
गर्व और अहभमान से नही ींअहपतु
सदैर् रहती उनकी गगनाहभमुख दृहि
आन्तररक आनन्दाहतरेक से
और एक हदव्यतम आकाींक्षा से
ि किरती उन्ें सबसे पृथक्।"
परन्तु कभी िब होता उनका यशोगान
बालर्त् पार्न उन्मुि हँसी

फूट पि़ती उनके शान्त तपस् के मध्य
और देखा है कुछ ने उन्हें मस्तक झुकाते
एक मिुर भ्रम में, कहा िाता है उन्हें िब सन्त।
आइए, करें हम प्राथवना उन भाग्यहीनो ींके हलए
हिनके गहन अज्ञान के दु:खद प्रदशवन से
हदव्य कुमुहदनी हो िाती हर्हलत
और क्षर् भर को छा िाता
हर्षाद उसके उज्ज्वल शीषव पर।
श्रद्धार्ान् है िो श्री स्वामी हिदानन्द िी के प्रहत
न हो केर्ल आश्चयविहकत
उनकी भव्य आिो-दीक्तप्त से
अहपतु बनायें हम अपने मन-हृदय इतने शुद्ध
हक उनमें हो प्रहतहबक्तम्बत उनकी हनष्कपटता,
उनकी सरलता और समस्त सद्गुर्।
िैसे करती है घास नमन कुमुहदनी को
हम करें र्न्दन हमारे सौम्य सन्त का।



कर्हयत्री के हर्षय में

श्री स्वामी रे्दान्तानन्द सरस्वती माता िी (श्रीमती सहपवया देर्ी)
यूरोप के पौलेण्ड देश की हनर्ासी थी।ीं रे् उच्च हशक्षा प्राप्त एक
प्रहतभासम्पन्न महहला थी।ीं उन्ें अनेक भारतीय एर्ीं पाश्चात्य
भाषाओ ींका ज्ञान था। अींगे्रिी तथा फ्रें भाषा में उन्ोनेीं गद्य एर्ीं
पद्य दोनो ींही हर्िाओ ींमें अनेक उले्लेखनीय रिनाएँ की।ीं रे्
एक कुशल हित्रकार भी थी।ीं अपने बनाये 'ॐ' के मनोहारी हित्रो ीं
को रे् हमत्रो ींएर्ीं बनु्धओ ींको उनके िन्महदर्स इत्याहद पर अत्यन्त
से्नहपूर्वक भेंट करती थी।ीं २० िुलाई १९५९ को उन्ें सद्गुरुदेर्
श्री स्वामी हशर्ानन्द िी महारिा से सींन्यास-दीक्षा का सौभाग्य प्राप्त
हुआ। इसके पश्चात् रे् मुख्यालय आश्रम में
अने्तर्ासी के रूप में रही।ीं र्षव १९८० में श्रदे्धेया माता िी ने अपनी निर देह का
त्याग हकया।